ST. Paul Teachers' Training College Birsinghpur

At- Jhahuri, P.O- Birsinghpur, Tehsil (Block) - Kalyanpur,
Samastipur Bihar, Pin - 848102,
Phone : 9905510604, 9905610604
E-mail : spttcbirsinghpur@gmail.com, Website: www.spttcbir.org

अपराजिता

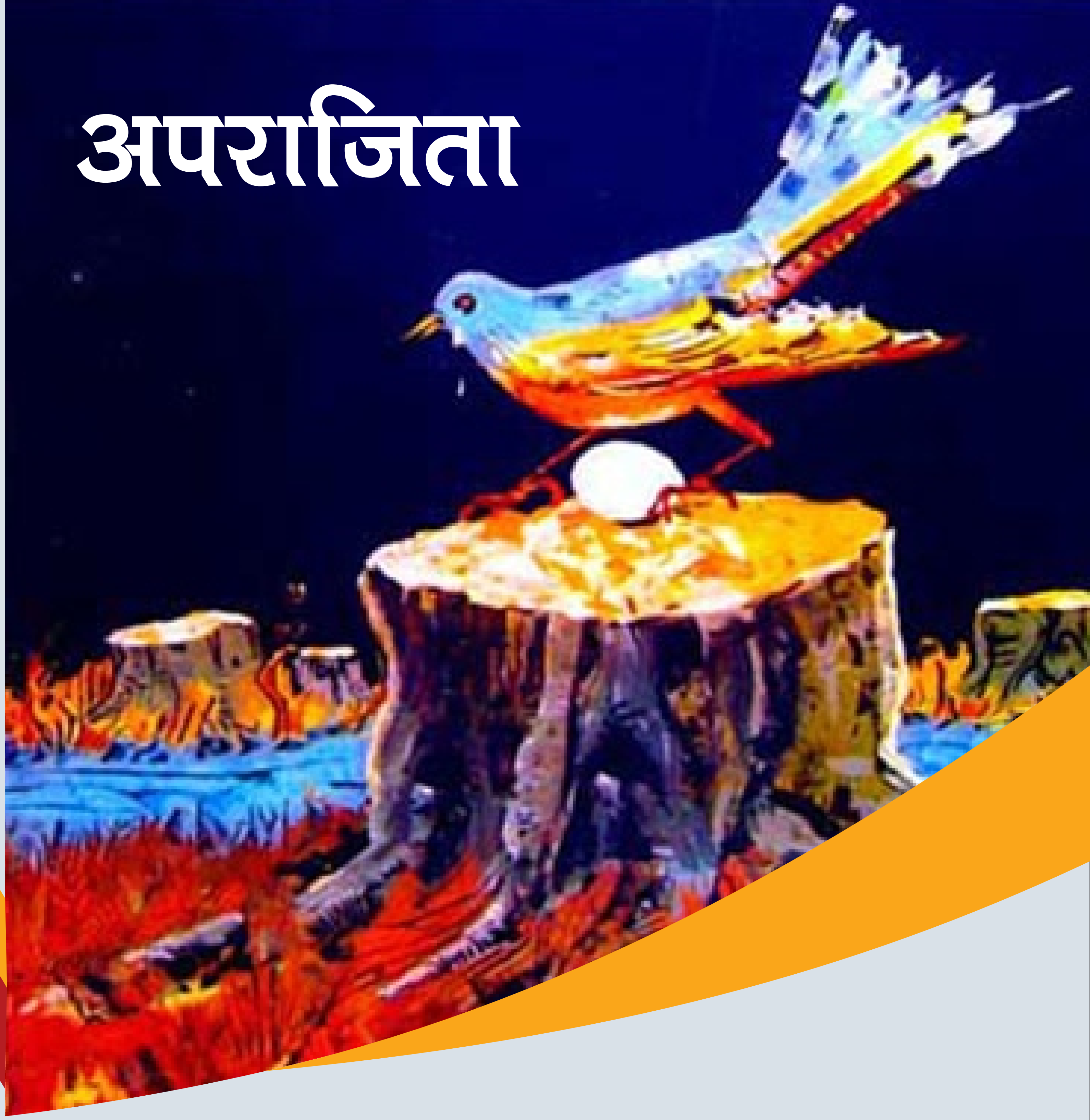

ST. Paul Teachers' Training College Birsinghpur

Volume - 01, Year - 2019

संपादक की कलम से,

संपादक
मनोज कुमार
सहायक प्राध्यापक

महाविद्यालय परिवार की ओर से प्रकाशित महाविद्यालय पत्रिका''अपराजिता'' के प्रथम अंक को आपके सामने रखते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। हमारे महाविद्यालय का यह छठा सत्र है। यह संस्थान समाज के युवाओं के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का सर्वोमुखी विकास करते हुए उन्हें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, आर्थिक एवं अध्यात्मिक रूप से सबल बनाते हुए सभी मौजूदा तकनीकों और आयामों के साथ प्रशिक्षित समाज को कुशल जिम्मेवार एवं योग्य शिक्षक समर्पित करने हेतु प्रतिबद्ध है। इस पत्रिका के प्रकाशन के प्रेरणास्त्रोत महाविद्यालय के उदीयमान सचिव श्री अविनाश कुमार जी को अपने सम्पादक मंडल की ओर से कोटि–कोटि धन्यवाद देता हूँ। इनके लिये एक शायरी है–
''हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पर रोता है,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।''

इस पत्रिका के प्रकाशन कार्य का मार्गदर्शन करने वाली विदुषी प्राचार्या डॉ0 रोली द्विवेदी जी को भी अपने ओर से साधुवाद देता हूँ। जिन्होंने अपनी कीमती वक्त देकर इस पत्रिका का विभिन्न पहलुओं का अवलोकन कर हौसला अफजाई कर अपने विचार रखे। मैं संत पॉल परिवार के संस्थापक श्रीमान् परमेश्वर प्रसाद नरायण सिंह को अपने सम्पादक मंडल की ओर से धन्यवाद करना चाहता हूँ कि उनके अथक प्रयास एवं दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण ही हमारे मन में इस पत्रिका के प्रकाशन का विचार आया। श्रीमान् पी.पी.एन.सिंह जी के आदर में मैं एक पंक्ति उन्हें समर्पित करना चाहूँगा।
''जिन्दगी बहुत कुछ सिखाती है, कभी हँसाती है तो कभी रूलाती है,
पर जो हर हाल में खुश रहते हैं, जिन्दगी उन्हीं के आगे सिर झुकाती है।''

संत पॉल परिवार के अध्यक्ष श्री उमाचरण प्रसाद सिंह जी का तमाम संपादक मंडल कृतघ्न है क्योंकि उन्होंने हमें गुरू शिष्य की परम्परा जो सदियों से चली आ रही है उसका अर्थ समझाया और इस पत्रिका की ''उत्कृष्टता'' बनाये रखने के लिए कहा। हमारी कोशिश यह है कि इस पत्रिका के माध्यम से समाज की कुरीतियों को दूर किया जाय, समाज में आपसी सामंजस्य कायम हो एवं शिक्षार्थियों को उनके अपनी क्षमता की पहचान करने में सहायता प्रदान करें। इन शिक्षार्थियों के लिये मैं एक शेर अर्ज करना चाहूँगा –
तकदीर तो एक पत्थर की संवर सकती है,
शर्त ये है कि सलीके से तराशा जाए।

साथ ही संस्थान के सभी शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण जो इसकी उपलब्धिओं के श्रेयपात्र है, हार्दिक रूप से धन्यवाद के पात्र है जिसकी कठिन साधना एवं पारस्परिक सहयोग से यह सफलता संभव हुई है।

यह पत्रिका सभी शिक्षकों, छात्राध्यापक, छात्राध्यापिकाओं की रचनात्मकता, चिंतनशीलता और क्रियाशीलता की अभिव्यक्ति है। इसमें उनकी निबंधों, कहानियों, कविताओं इत्यादि को शामिल किया गया हैं।

पत्रिका के इस अंक को वर्त्तमान रूप में साकार करने में प्रेस के सभी कर्मियों एवं संचालक को हार्दिक धन्यवाद जिन्होंने इस पत्रिका को आकर्षक रूप–रंग में मुद्रित–सुसज्जित कर सुन्दर स्वरूप प्रदान किया है।

''तमसोमात्योतिर्गमय। असतोमा सदगमय के सनातन सत्य पथ पर मंजिल की ओर बढ़ने में यह पत्रिका संवल का काम करेगी।

अन्त में मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं उसके उद्देश्य की प्राप्ति की उज्जवल कामना करता हूँ।

Paper Clippings

प्रतियोगिता के विजेताओं को मिला सम्मान

समस्तीपुर,वि : संत पॉल शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय वीरसिंहपुर डीएलएड संभाग की ओर से क्विज प्रतियोगिता हुई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्राचार्या डॉ. रोली द्विवेदी ने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिता से मानसिक विकास एवं निर्णय लेने की शक्ति का विकास होता है। इससे भविष्य भी उज्जवल होता है। क्विज प्रतियोगिता से सोचने की शक्ति का विकास होता है। सचिव अविनाश कुमार ने क्विज में भाग लेने वाले सहभागी की सराहना की। प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले छात्र–छात्राओं को प्राचार्या ने प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया। संचालन अर्पणा कुमारी एवं मिथिलेश कुमार ने किया। मौके पर तहसीन आलम, नंदेश ठाकुर, विजय शंकर आदि मौजूद रहे।

छात्र-छात्राओं ने किया शैक्षणिक भ्रमण

शैक्षणिक भ्रमण के दौरान उपस्थित छात्र–छात्राएं। • हिन्दुस्तान

समस्तीपुर। संत पॉल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज वीरसिंहपुर, समस्तीपुर के बीएड. द्वितीय वर्ष के छात्र-अध्यापकों ने राजगीर का एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने प्राचीन नालंदा विवि, शांति स्तुप, गरम कुंड, लक्ष्मण झूला का अवलोकन किया। कॉलेज के प्राध्यापक अमरेन्द्र कुमार, मनोज कुमार, सीबी मिश्रा, मो. निजामुद्दीन, सुरेन्द्र चौधरी, मीना कुमारी, रौशन कुमार (पुस्तकालयाध्यक्ष) एवं विनय झा इसका नेतृत्व कर रहे थे।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ को निकाली रैली

समस्तीपुर। संत पॉल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय वीरसिंहपुर में प्रशिक्षु छात्र छात्राओं के द्वारा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ रैली निकाली गयी। प्रशिक्ष छात्र-छात्राओं ने वीरसिंहपुर एवं उस से सटे हुये गांव में रैली के माध्यम से बेटी को शिक्षा देने के लिये समाज को जागरुक किया। मौके पर प्राचार्य डॉ. रोली द्विवेदी व डॉ. एपी सिंह ने भी अपने विचार रखे।

सम्मानित शिक्षक व छात्र • जागरण

सेंट पॉल में सेमिनार का आयोजन

समस्तीपुर, वि.: स्थानीय संत पॉल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज वीरसिंहपुर में समाज के पुनर्निर्माण में शिक्षक की भूमिका विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इस क्रम छात्रों के द्वारा सभी शिक्षकों को मिथिला परंपरा के अनुसार पाग एवं चादर से सम्मानित किया गया। प्राचार्या डॉ. रोली द्विवेदी ने केक काटा। इस अवसर पर छात्र/छात्राओं के द्वारा संगीत, कविता तथा नृत्य की स्तुति की गई। इस अवसर पर छात्रा राजलक्ष्मी, अंजनी कुमार, कामनी, तितिक्षा तथा पूजा ने अपने मधुर गान से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। विषय प्रवेश डॉ. विनय कुमार ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षक अमरेन्द्र कुमार, मनोज कुमार, निजामुद्दीन, तहसीन आलम, शंभू कुमार शर्मा, सुरेन्द्र चौधरी, सीबी मिश्रा, मीना कुमारी, मिथिलेश, पवन कुमार आदि थे।

संत पॉल बीएड कॉलेज में प्रशिक्षु शिक्षकों ने चित्रकला और रंगोली प्रदर्शनी का किया आयोजन

समस्तीपुर | प्रशिक्षु शिक्षकों में रचनात्मक शैली के विकास के लिए समय समय पर हर तरह का कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास हो। ये बातें वीरसिंहपुर स्थित संत पॉल बीएड कॉलेज के प्राचार्य रौली द्विवेदी ने प्रदर्शनी के निरीक्षण मौके पर कही। उन्होंने कहा कि यहां छात्रों को व्यक्तित्व व कृतित्व में समानता की शिक्षा दी जाती है। कुशल शिक्षक ही बच्चों को आदर्श नागरिक बना सकते है। देश को सच्चे नागरिक की जरूरत है। उन्होंने कहा कि चित्रकला व रंगोली अपनी भावना की अभिव्यक्ति का सुंदर माध्यम है। भूतपूर्व विधायक द्वारा रंगोली में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों को सम्मानित किया गया। इस मौके पर डॉ. भोला चौरसिया, डॉ. अनिल कुमार सिंह ने बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर डॉ एपीएन सिंह व सौरव कुमार भी मौजूद थे।

संत पॉल टीचर ट्रेनिंग कॉलेज में सेमिनार

समस्तीपुर| वीरसिंगपुर स्थित संत पॉल टीचर ट्रेनिंग कॉलेज में समाज के पुनर्निमाण में शिक्षक की भूमिका विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस मौके पर संस्थान के प्राचार्य डॉ रोली द्विवेदी ने कहा कि शिक्षक समाज का दर्पण है। समाज के नवनिर्माण में शिक्षक की अहम भूमिका होती है।

इस मौके पर शिक्षक विनय कुमार, मनोज कुमार, अमरेन्द्र कुमार, शंभू कुमार शर्मा, तहसीन आलम आदि ने विचार रखे। मथुरापुर स्थित जेपी सेंट्रल स्कूल में भी शिक्षक दिवस के मौके पर प्राचार्य दिलीप कुमार ठाकुर ने बेहतर कार्य करने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया। इस मौके पर सचिव महेश कुमार ने शिक्षकों को ईमानदारी से कार्य करने की सलाह दी।

कॉलेज में ई–लाइब्रेरी की सुविधा शुरू

समस्तीपुर, वि. : संतपॉल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज वीरसिंहपुर में ई-लाइब्रेरी की सुविधा शुरू हो गई है। कॉलेज की प्राचार्या डॉ. रोली द्विवेदी ने बताया कि इंटरनेट के युग में छात्रों एवं शिक्षकों को यहां ई-लाइब्रेरी की सुविधा दी जा रही है। सभी छात्रों एवं शिक्षकों का लर्निंग आईडी बनाया गया है, जिससे वे अपने मोबाइल में भी इंटरनेट की सुविधा से लाइब्रेरी में रखी किताबें आसानी से ढूंढ़ सकते हैं। इतना ही नहीं लाइब्रेरी में किताब उपलब्ध है या नहीं इसकी भी जानकारी छात्र एवं शिक्षक घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं।

लाइब्रेरी में अध्यन करती प्रशिक्षु छात्राएं

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता

जासं, समस्तीपुर : संत पॉल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में प्राचार्या डॉ. रोली द्विवेदी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम को कई लोगों ने संबोधित किया। कहा कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' इसे डॉ. विनय कुमार, संजू, अल्पना, एकता, कामिनी, विनोद कुमार, प्रमोद कुमार, संजीव कुमार, कुमार अभिषेक इत्यादि ने अपने विचार को रखा। महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. एपी सिंह, मनोज कुमार, सीबी मिश्रा, श्याम किशोर, सुरेंद्र कुमार, रंजन कुमार, मीना कुमारी, कुमार सौरव, रौशन कुमार, राजाराम कुमार, राम कृष्ण भारती, नंद किशोर, अवनीश कुमार, एससी चौधरी एवं विनय झा आदि ने संबोधित किया।

श्री परमेश्वर प्रसाद नारायण सिंह
संस्थापक एवं सचिव
संत पॉल सीनियर सेकेंडरी स्कूल
वीरसिंहपुर, समस्तीपुर

शुभकामना संदेश

'शिक्षा' शब्द का अर्थ केवल ज्ञान और ज्ञान से अधिक है, यह शिक्षा, कला, खेल भावनाएँ, दृष्टिकोण, सृजनात्मकता, प्रकृति और जीवन का एक सामंजस्यपूर्ण संगम है। आज हमने जो दुनिया बनाई हैं, वह इन सभी क्षेत्रों में निपुण है।

एक शिक्षक के रूप में हमें एक ऐसी संस्था के निर्माण के लिए दृढ़ इच्छा थी, जहाँ मानवीय मूल्यों के सभी रंगों से मिश्रित शिक्षा दी जा सके, हमें यह कहते हुए गर्व अनुभव हो रहा है कि एक गुणवत्तापूर्ण संस्थान का हमारा स्वर्णिम स्वप्न संत पॉल के माध्यम से साकार हो रहा है।

हमने हमेशा माना है कि ''उत्कृष्टिता'' से कभी भी दुर्घटना नहीं होती है, यह हमेशा दृढ़ इच्छाशक्ति ईमानदारी पूर्ण प्रयास, उत्तमदिशा और कुशल निष्पादन का परिणाम है। हमारे यह शब्द संत पॉल की वर्त्तमान स्थिति का सर्वोत्तम वर्णन हैं।

''अपराजिता'' के प्रथम संस्करण के सफल संपादन हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

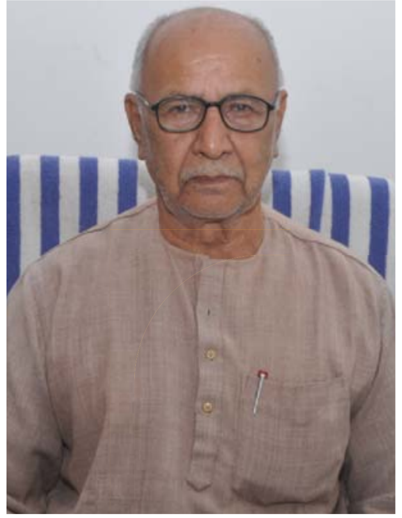

शुभकामना संदेश

श्री उमाचरण प्रसाद सिंह
अध्यक्ष

मानव जीवन के उत्थान के लिए विद्यालय, शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षार्थियों को सम्पूर्ण समर्पण की आवश्यकता होती है। गुरू शिष्य की परम्परा जो सदियों से चली आ रही है आज भी गुरू ही शिक्षार्थियों की अन्तर्निहित प्रतिभा को परख कर इसे समयानुसार प्रकट करके उसे ज्ञान योग्य बनाते हैं, कि वह आगे सही दिशा में चलकर अपने विद्यालय, माता–पिता देश के मान–सम्मान में वृद्धि कर सकें।

जीवन में कोई कार्य कठिन नहीं होता, कोई भी लक्ष्य असाध्य नहीं होता। दृढ़ इच्छा शक्ति और कठिन परिश्रम द्वारा मंजिल की ओर पहुँचा जा सकता हैं। किसी विद्यालय की महानता या गरिमा का निर्धारण उसके संसाधन, उपकरण एवं उसमें कार्यरत प्रध्यापाकों की विद्वता एवं कार्य क्षमता से निर्धारित होती हैं।

आप सब विद्वान प्राध्यापाकों एवं शिक्षार्थियों से अपेक्षा करता हूँ कि आप सब मिलकर महाविद्यालय का स्वर्णिम इतिहास बनाने में अपना अमूल्य योगदान देते रहें।

अंततः ''अपराजिता'' के संपादक, प्रबंध समिति के समस्त सदस्यगण प्राध्यापकगण एवं शिक्षार्थियों को पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

शुभकामना संदेश

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा – 846004 (बिहार)

प्रो० सुरेन्द्र कुमार सिंह
कुलपति

सम्पर्क : 06272 - 222463 (T-F) - Office
222598 (T-F) - Resd.
222589 (T) - Resd.
मो०: +91 7632996545
ई–मेल vc@lnmu.ac.in
vc-lnmu-bih@nic.in

पत्रांक .... दिनांक ....

शुभकामना संदेश .

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि संत पॉल महाविद्यालय, वीरसिंहपुर, समस्तीपुर एवं परमेश्वर नीता एजुकेशनल ट्रस्ट द्वारा संचालित संस्थान शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम कार्य कर रही है। इस अवसर पर वर्षिक पत्रिका **"अपराजिता"** का प्रकाशन मिथिला वासियों के लिए अत्यन्त अह्लादकारी एवं परम सौभाग्य की बात है। समाज के हर पहलु का विकास करने में इनके साकारात्मक प्रयास सहयोगी साबित होते रहे हैं। पत्रिका का प्रकाशन संदेशों को जन–मानस पहुँचाने हेतु एवं जन–चेतना को जाग्रत करने में लाभकारी साबित होगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले वर्षों में यह अग्रणी एवं अनूठी भूमिका के साथ तेजी से विकास करेगा।

शुभकामनाओं सहित।

(सुरेन्द्र कुमार सिंह)
कुलपति

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही हैं कि संत पॉल टीचर्स ट्रेनिंग कॉजेल वीरसिंहपुर समस्तीपुर द्वारा महाविद्यालय पत्रिका ''अपराजिता'' के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। वास्तविक रूप से पत्रिका किसी महाविद्यालय के शैक्षिक उन्नयन के किए जा रहे प्रयासों, कार्य–कलापों एवं शिक्षार्थियों की सृजनशीलता तथा उनकी अभिव्यक्ति का प्रतिबिम्ब होता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका महाविद्यालय के शैक्षणिक क्रिया–कलापों व शिक्षार्थियों के उन्नयन में अत्यंत उपयोगी व प्रेरणाप्रद सिद्ध होगी।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए समस्त शिक्षार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

श्रीमती हरप्रीत कौर

भूतपूर्व आरक्षी अधीक्षक

समस्तीपुर

शुभकामना संदेश

छात्रों के भविष्य की कामनाओं के साथ–साथ, इस संस्था से प्रकाशित होने जा रही 'अपराजिता' नाम की पत्रिका की भी भविष्य की कामना सहृदय होकर करना चाहता हूँ।

जिस प्रकार इस संस्था ने जाज्वल्यमान छात्रों को विकसित किया, उसी प्रकार प्रस्तुत पत्रिका भी आपके संस्कारों से छात्र/शिक्षकों को आहलादित एवं मर्यादित करती रहेगी, इस आशा के साथ पुनः मैं इस संस्था एवं पत्रिका को अपनी शुभकामना देता हूँ।

सत्येन्द्र झा

भूतपूर्व जिला शिक्षा पदाधिकारी
समस्तीपुर

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी हो रही है कि संत पॉल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज वीरसिंहपुर, समस्तीपुर द्वारा महाविद्यालय पत्रिका ''अपराजिता'' के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हम इस महाविद्यालय के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ शिक्षा की अलख जगाते रहने की कामना करता हूँ। साथ ही दो पंक्ति अपने अनुज श्री अविनाश कुमार जी के लिए कहना चाहता हूँ –

अकेले सफर करना पड़ता है
इस जहाँ में कामयाबी के लिए ....
काफिला, दोस्त और दुश्मन
अक्सर कामयाबी के बाद ही बनते हैं।

अन्त में ''अपराजिता'' के संपादक, प्रबंध समिति के समस्त सदस्यगण, प्राध्यापकगण, शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण एवं शिक्षार्थियों को पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

अमिताभ कुमार
सचिव
संत पॉल सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल,
बेगूसराय

I am very happy to note that St. Paul Teachers' Training College Birsinghpur, Samastipur is bringing out the annul College Magazine "Aaprajita 2019".

I hope that the Magazine being brought out will be interesting and will stimulate and encourage the hidden talents of the students and faculty.

My best wishes to the faculty members, students and entire editorial team of the "Aaprajita".

Avinash Kumar
Secretary

शुभकामना संदेश

शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के ह्रदय मस्तिष्क और आत्मा का सही मार्गदर्शन करती है, शिक्षार्थियों का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा का उद्देश्य है। हमारे सक्षम और सुयोग्य प्राध्यापक–वृन्द शिक्षार्थियों को गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर हैं। शिक्षार्थियों को अधिकाधिक अवसर प्रदान करने, सूक्ष्म निरीक्षण करने, कारण–प्रभाव जानने हेतु हमारे महाविद्यालय में प्रेरित किया जाता है। हम अपने शिक्षार्थियों को अपनी क्षमता की पहचान करने में सहयोग करते हैं और निरंतर प्रयास, धैर्य और ध्यान के माध्यम से लक्ष्य की ओर मार्ग प्रशस्त करते हैं। हम शिक्षार्थियों को कठिन परिश्रम करने के लिए प्रेरित करते है। हमारे महाविद्यालय की समस्त गतिविधियों का उद्देश्य केवल शैक्षिक उपलब्धि हासिल करवाने पर नहीं है, बल्कि शिक्षार्थियों को समाज उपयोगी एवं सामर्थ्य को समझने, परोपकार की ज्योति जलाने, राष्ट्रीयता का विकास करने का है।

हम आशा ही नहीं करते पूर्ण विश्वास है कि एक दिन हमारे शिक्षार्थी, हमारे महाविद्यालय का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित कराएगें। हमारा प्रयास हैं कि सभी शिक्षार्थी अच्छें स्वप्न देखें और उन्हे पूरा करने के लिए सतत् प्रयास करें।

डॉ. रोली द्विवेदी
प्राचार्या

मानवीय मूल्यों पर आधारित महाविद्यालय प्रशिक्षु छात्र/छात्राओं के बहुमूखी विकाश के लिए अग्रसर साबित होगा। हमारा महाविद्यालय मानवीय मूल्यों एवं नैतिकता के विकाश के साथ – साथ समाज के सभी वर्गो को दर्पण दिखाने के लिए मार्ग अग्रसर करेगा।

डॉ. ए. पी. सिंह
एच. ओ. डी.
डी. एल. एड.

सुचना एवं प्रौद्योगिक के दौर में अध्यापक शिक्षा की बढ़ती भूमिका, बिहार राज्य के संदर्भ में

मो० नेज़ामुद्दीन
सहायक प्राध्यापक

आज 21 वीं शताब्दी के दौर जिसे सूचना प्रौद्योगिकी के दौर कहा जाए जो यह आश्चर्य की बात नही होगी। इस सूचना एवं प्रौद्यागिकी युग में अध्यापक शिक्षा में काफी तेजी से बदलाव देखने को मिल रहा है। प्रारंभिक दौर में जग गुरूकूल पद्धति, मध्यकाल मे मदरसा व मकतब का दौर, इसके पाश्चात स्कूल कॉलेज के समय से आगे बढ़ते हुए दूर – शिक्षा प्रणाली एवं विश्व के अच्छे – अच्छे विश्वविद्यालय में प्रोफेसर द्वारा दिया गया व्याख्यान अब इंटरनेट के माध्यम से दूनिया के किसी भी कोने में रहकर उस शिक्षा में शामिल हो सकते है तथा वह हमेशा किसी खास बेवसाइटस पर रहता है। आज कक्षा पद्धति में प्रोजेक्टर का प्रयोग ने कम संसाधन के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा शिक्षा का सरल मितव्ययी व सुदूर क्षेत्र तक अध्यापक की महत्ता को बढ़ा रही है।

जहा तक बिहार राज्य का प्रश्न है 12 करोड़ का जन समूह रखने वाला राज्य है जिसकी साक्षरता 64 प्रतिशत है इसके साक्षता दर का बढ़ावा सूचना एवं प्रौद्योगिकी की काफी भूमिका है इसका अन्तर आप 1991 की साक्षरता से कर सकते है। यहा अध्यापक शिक्षा में सूचना एवं प्रौद्योगिकी का योगदान काफी बढ़ रहा है। यहाँ पर कॉलेज, स्कूल में एल.सी. डी., एल.इ.डी., टी.वी., कम्प्यूटर, इंटरनेट और प्रोजेक्टर से व्याख्यान की व्यवस्था की जा रही है। आज बिहार में राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार हो रहे है जो अध्यापक शिक्षा को बढ़ावा दे रही है।

बिहार जहां प्रारम्भ से शिक्षा का केन्द्र रहा है यहा पर गुरूकुल पद्धति, तक्षशिला, नालन्दा विश्वविद्यालय, मदरसा व मकतब का जमघट है। आज 21 वीं शताब्दी में भी सूचना के दौर में देश व दुनिया किसी से कम नही व आधुनिक शिक्षा पद्धति में सभी के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। इसमें पूरा सहयोग अध्यापक शिक्षा का योगदान उनकी प्रशिक्षण का तौर तरीका है।

अभिभावक का किशोर के प्रति कर्तव्य

अमरेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक

सभी टीन एजर बच्चों के अभिभावाके से अपील
शायद आपने बच्चों के विचारों, व्यवहारों, पहनावों, नैतिक स्तरों, उनके द्वारा बोले गए अपशब्दों और अन्य गतिविधियों पर गौर करते होंगे और पाते होंगे उनमें तब्दीली. कभी आपकों हैरत होती होगी तो कभी अत्यंत कष्ट. शायद आपने कारणों को तलाशने की कोशिश भी की होगी. अरसों से बच्चों के बीच रहते हुए मैंने भी दिन–दिन हो रहे उनमें परिवर्तनों पर गंभीरतापूर्वक विचार किया और पाया बच्चें पर हमारा प्रभाव तभी तक रहता है जबतक वे हमारे घर–आँगन तक रहते हैं . वे ज्योंही घरों की दहलीज को लाँघकर पड़ोसियों, पाठशालाओं, खेल के मैदानों, मेलों, विभिन्न उत्सवों, कालेजों एवं अन्य जगहों पर आना – जाना शुरू कर देते हैं उनमें बहुत सारी अच्छी–बुरी आदतें आने लगती हैं और तब उनमें माता–पिता के संस्कार आनुपातिक रूप से घटने लगते है।

जब हमारे बच्चें अखबारों, इंटरनेट, टीवी चैनलों, सोशल मिडिया (फेसबुक, व्यट्सएप, इस्टाग्राम, मैसेंजर आदि) के संपर्क में आते है, तब खासकर टीनएजर्स अपने हार्मोनिक डेवलपमेंट के कारण उन बातों या दृश्यों की तरफ ज्यादा आकर्षित होते है। जिन विषयों पर हम या तो बातें करना मुनासिब नहीं समझते या फिर संकोच के कारण उनकी बौद्धिकता को वैज्ञानिक तरीकें से ऊँचाई तक नहीं ले जा पाते हैं और बच्चे स्वयं अपने हाथ जलाकर उन चीजों के बारे में जानकारी प्राप्त करते है। कभी – कभी हम पहले करने में बहुत देर कर चुके होते है।

हमारी तमम गतिविधियों को हमारे बच्चे रीड ही नहीं अनुसरण भी करते हैं हमारे मुख से निकलनेवाली गालियाँ हमारे बच्चों की जुबान पर भी चढ़ ही जाती है।

बच्चों को सुसंस्कृत करनेवाली ताकते दिन – दिन कमजोर पड़ रही हैं और कुत्सित विचार डालनेवाली ताकतें सिर चढ़कर बोल रही हैं।

हमने अपने बुजुर्गों से सारे अधिकार छीनकर भारी गलती की है। यही कारण है क स्वयं के अपमान के भय से वे अपने जीवन के खट्टे–मीठे अनुभवों के आधार पर वे न तो शिकायती अल्फाज निकाल पाते हैं और न ही कोई अनुशासनात्मक कार्यवाही कर पाते है। धीरे –धीरे हमारे बच्चें हमसे और अपने समज से कटते जाते हैं।

कृपया गंदी हरकतों और बातों से बचिए।
कृपया अपने अनैतिक आचरणों पर लगाम लगाएँ।
कृपया अपने सद्विचारों से समाज को स्वच्छ और सुंदर बनाएँ।
कृपया पारस्परिक प्रेम, भाईचारे, परोपकार, सहयोग, सहिष्णुता आदि को अपने व्यवहारों में शामिल करें।
कृपया पड़ोस कल्चर को बढ़ावा दें।
कृपया टीन एजर्स बच्चें से विभिन्न मुद्दों पर खुलकर बातें करें और उनमें वैज्ञानिक एवं सामाजिक सोच पैदा करें।

कृपया उनका नैतिक उन्नयन करें, उन्हें अच्छी पुस्तकें पढ़ने को दें सत्संगति दें अच्छा माहौल दें।

!!सावधान!!

आपकी अकर्मण्यता उपकी अतिव्यस्तता आपकी लापरवाही से आपका ही नहीं पूरे मानव – समाज ओर देश का भारी नुकसान हो रहा है। आपके बच्चों में लगातार शारीरिक, मानसिक और नैतिक नपुंसकता बढ़ती जा रही है।

Poverty and Education

S. M. Tahseen Alam.
Asst. Professor

Things are changing around us very dramatically very quickly. The world is becoming more interconnected the environment is becoming less stable and technology is continuously altering our relationship to information changing global condition demands that we think what but even more important how much in which condition peoples learn we need education for the 21th century.

Poverty has affected education in all aspects. It has affected not only access, retention and is achievement of for children but also access to quality education. Poverty is not simply the absence of financial resources. Poverty is the lack of capability to function effectively in society. Inadiquate education can thus be considered a form of Poverty.

Poverty and education are inextricably linked, because people living is poverty may stop going to school so they can work, which leaves them without - Literacy and numeracy skills they need to further their careers. Their children, in turn are in a similar situation years later, with little income and few options but to leave school and work. Absolutely Poverty- The absence of adequate resources - hampers learning is developing countries through poor nutrition, health, how circumstances (Lack of books, lighting on places to do home work) and parental education. It discourages envalment and survival to higher grades, and also reduces learning is schools. The relative poverty perspective emphasizes exclusion from the mainstream which can reduce the motivation of the relatively poor and their ability to gain full benefits from education.

Education can reduce poverty in a number of ways. Firstly, more educated people are more likely to get Jobs, are more productive and earn more. Secondly, through international literature finds no simple Causal relationship between educational attainment and the economy growth and there by generates economic opportunities and incomes. Thirdly, education (particularly of girls) brings social benefits that improve the situaton of the poor, such as lower fertility, improved healthy care of children, greater participation of women in the Labour market.

Key of Success

C.B. Mishra
Asst. Professor

Failure or success depend upon the person who are doing the work. It is the combination of their inner and outer qualities. For success, we have many qualities upon which, we can imagine of our success. In these qualities some important qualities have been given below, which have been clarified by the position of English alphabet like 1 % for 'A' 2% for 'B' 3% for 'C' et.

(i) LABOUR :

L-12%, A-1%, B - 2 %, O-15%,
U-21%, R-18%

So, by doing labour there is (12+1+2+15+21+18)% = 69% chance for getting success.

(ii) MONEY :

M-13%, O-15%, N - 14%, E-5% Y-25%

So, if we have money then there is only (16+15+14+5+25)% =72% chances for success.

(iii) DEDICATION :

Whoever has achieved success in their lives, they have dedicated themselves. Now, let us see the numerical position of the word Dedication on the basis of Alphabetical order

D-4%, E-5%, I-9% C-3%, A-1%
T-20%, I-9%, O-15%, N-14%

So, on this basis only (4+5+4+9+1+20+9+15+14)% = 84% of Success can be achieved.

(iv) FATE :

Most of us believe that success depends upon fate. It is also believed that we can't avoid the things which is preordained by God. Now let us see the numerical position of 'Fate'

F-6%, A-1%, T-20%, E-5%,

So, on this basis only (6+1+20+5)% = 32% chances are there to success.

(v) ATTITUDE:

We see the numerical position of the word 'ATTITUDE'
A-1%, T-20%, T-20%, I-9%, T-20%,
U-21%, D-4%, E-5%

So, on changing our 'Attitude' there is (1+20+20+9+20+21+4+5)= 100% chances for success.

Thus, if we get failure in any work then, we should not skipout from our 'Aim' but we have to change our 'Attitude' for doing that work.

आत्म विश्वास

नन्देश कुमार ठाकुर
सहायक प्राध्यापक

थम – थोक ठेलता हो जब नर, पत्थर के जाते पॉव फिसल,
मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है।।

असंभव को संभव कर दिखाने वाली शक्ति आत्मविश्वास है। संघर्षमयी जीवन में कितने दुर्भाग्य की बात है कि हम अपना मूल्य विजय से नही पराजय से ऑकते है हम विजय को कोरा स्वप्न ही मान लेते है उसे वास्तविक जीवन का अंग नही मानते। हम अपनी शक्ति की अपनी कमजोरी से तुलना करते है अपने को पहचानने में बिलम्ब कर देते है।

युद्धभूमि में विजय पाने के लिए योद्धा – युद्ध में सैनिक का शरीर नही बल्कि उसका हृदय लड़ता है, उसका हृदय नही बल्कि उसमे भरा उसका आत्मविश्वास लड़ता है, किसी व्यक्ति की विजय होने की गाथा उसके आत्मविश्वास के बल पर लिखी जाती है यदि विश्वास नही तो विजयी भी नहीं। स्वंय पर विश्वास रखते ही हम अजेय हो जाते है फिर संसार भर की शक्ति भी हमारा कुछ बिगाड़ नही सकता। हमारी सफलता तथा निराशा का यदि कोई कारण है तो वह है हमारे आत्मविश्वास मे कमी। यदि विश्वास होगा तो विजय स्वंय आकर पॉव चूमेगी।

संदेह और आत्मविश्वास से डोलता हृदय जीवन में सफलता के लक्ष्य को प्राप्त करने में असमर्थ रह जाता है। जीवन का अमूल्य सिद्धांत है कि आप अपनी सफलता पर सन्देह करने लग जायेंगे तो कभी पूर्ण सफलता नही प्राप्त कर पायेंगे। आत्म विश्वास के अभाव में ईश्वर भी आपकी मदद नही करता। सफलता पाने के लिए भरोसा करना आवश्यक है।

असम्भव को सम्भव कर देने वाली और पर्वतों को हिला देने वाली शक्ति स्वंय को झकझोर देने के बाद दशरथ मॉझी एवं वर्तमान के प्रधामंत्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जैसे व्यक्ति आत्म विश्वास के कारण ही नई इतिहास रचता है। जिस प्रकार वटवृक्ष के एक छोटे से बीज को ज्ञात नही है कि उसके अन्दर एक भीमकाय विशाल वटवृक्ष है जो अनुकूल परिस्थितियों में घना और विशाल बना है। व्यक्तित्व का विकास आत्म विश्वास से ही सम्भव है। जिसने अपने को जान लिया है उसने विश्व को ही नही अपितु ईश्वर तक को पहचान लिया है। आदिमानव से सभ्य मानव की प्रगति उसके संघर्ष की नई – नई खोज आत्मविश्वास के कारण ही तो की है।

आत्मोत्कर्ष

सुरेन्द्र प्रसाद चौधरी
सहायक प्राध्यापक

प्रकाश की ओर चलने पर छाया पीछे –2 अनुगमन कारती है, अंधकार की दिशा में बढ़ने पर छाया आगे आ जाती है, उसी प्रकार दित्यता की ओर अर्थात श्रेष्ठता की ओर, परमात्मा पथ की ओर बढ़ने पर छाया अर्थात त्रिद्धि–सिद्धिया साधक के पीछे – 2 चलने लगती है। पात्रता के अभाव में अधिकांश आध्यात्मिक वियुत्तियों से वंचित रह जाना पड़ता है। जबकि पात्रता विकसित हो जाने पर बिना माँगे ही वे साधक पर बरसती है। यह सच है कि अध्यात्मक का, साधना का चरम लक्ष्य सिद्धियाँ चमत्कारी की प्राप्ति नहीं है, पर जिस प्रकार अध्यवसाय में लगे छात्र को डिग्री की उपलविध के साथ – 2 बुद्धि की प्रखरता के अतिरिक्त अनुदान सहज की मिलता रहता है। उसी तरह आत्मोत्कर्ष की प्रचण्ड साधना में लगे साधको को उन विभुतियों का भी अतिरिक्त अनुदान मिलता रहता है, जिसे लोक – व्यवहार की भाषा में सिद्धि एवं चमत्कार के रूप में जाना जाता है। पर चमत्कारी हाते हुए भी ये प्रकाश की छाया जैसी ही एक व्यक्ति निर्धारित कसौटियों पर खड़ा उतरकर ही विशिष्ट स्तर की सफलता अर्जित कर सकता है। मात्र मांगते रहने से कुछ ही मिलता। हर उपलब्धि के लिए उसका मूल्य चुकाना पड़ता है। उदाहरण स्वरूप –

बाजार में विभिन्न तरह की वस्तुएँ दुकानों में सजी होती है, पर उन्हें कोई मुफ्त में कहाँ प्राप्त कर पाता है? पात्रता के आधार पर ही शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय आदि क्षेत्रों में सफलता प्राप्त होती है। फलतः हम सभी छात्रों को निरन्तर परिश्रम करते रहना चाहए।

सफलता निश्चित तौर पर एक न एक दिन चरण चूमेगी।
एक पंक्ति के माध्यम से मैं कहना चाहूँगा –
"रख भरोसा खुद पर, क्यों ढूढते हो फरिश्ते।
पंछियों के पास कहाँ होते है नक्शें,
फिर भी ढूँढ लेते है रास्ते।
अर्थात सफल होने के लिए पहले स्वयं पर भरोसा करना चाहिए।

शिक्षा और शांति

श्याम किशोर सिंह
सहायक प्राध्यापक

शिक्षा मानव जीवन का आधार है। मानव का विकास शिक्षा पर ही निर्भर है। शिक्षा व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है और श्रृंगार भी करती है। शिक्षा ही मानव को असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर और मृत्यु से अमरत्व की ओर जाने के लिए प्रेरित करती है, शिक्षा के कारण ही मानव आज सभ्यता के इस ऊँचे शिखर पर पहुँच पाया है। शिक्षा एक अनन्त प्रयास है जिसका सम्बन्ध केवल जीने की कला मात्र नहीं है अपितु वह स्वंय जीवन के आदर्शो से जुड़ी है।

हमारा पूरा विश्व एक विद्यालय की तरह है यहां पर कही से भी शिक्षा ली जा सकती है। शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। यदि समाज में और बच्चों में सही प्रकार से शिक्षा दी जाये तो मैं समझता दूं कि हमारे समाज से अनेक बुराईयों को मिटाया जा सकता है। इसलिए अच्छी शिक्षा प्रदान करने के लिए अच्छे शिक्षक का होना जरूरी है, वास्तविक शिक्षक वह होता है, जो छात्रों को उसके जीवन में आनेवाली कल की चुनौतियों के लिए तैयार करें। अच्छी शिक्षा के लिए अच्छी पुस्तके भी जरूरी है, पुस्तके वह साधन है जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच एक पुल का निर्माण कर सकते है।

वर्तमान समय में शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारी करण, हो गया है। यह देश के लिए बड़ी चुनौती है। पुराने जमाने में भारत की शिक्षा कभी व्यवाय नही थी। शिक्षक ही वो है जो एक शिक्षार्थी को उचित आदर्शो की स्थापना करते हैं और सही मार्ग दिखाते है। एक शिक्षार्थी को अपने शिक्षक के प्रति सदा आदर व कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए।

शिक्षा का अर्थ केवल लिख्ना पढ़ना और गणना कर लेना ही नहीं है हमें ऐसी शिक्षा का विकास करना होगा जिससे एक दूसरे का आदर करना सिखया जाए। ऐसी शिक्षा जिसकी मदद से एक शांति पूर्ण और खुशहाल समाज का निर्माण हो सके।

हम आधुनिक जरूर है, लेकिन केवल बाहर से आधुनिकता के नाम पर हम काफी कुछ भूल बैठे जिसमें अपने मूल्य और संस्कृति मुख्य है। आस्थ के नाम पर ढ़कोसले हावी है। धर्म के नाम पर झगड़े आम हो गए है, हमें एक दूसरे पर भरोसा नहीं है, जो अपने प्रयासों से आगे बढ़ रहे है उनकी टाँगे खीचने की संस्कृति हमारी नहीं हैं शांति कैसे कायम होगी जब हम अन्दर से अंशात है, अपने ही लोगों के बीचरहकर दुखी हैं शांति का महौल तब तक नहीं बन सकता जब तक हम स्वविकास पर ध्यान नहीं देंगे। स्वविकास के लिए सबसे पहले अपने मूल्यों को अपनाना होगा। वही मूल्य जिसमें ''अप्पदीपोंभवः'' की सीख दी गई हो,आर्थात बाहर दीप जलाने पर केबल बाहर का अंधकार दूर हाता है, जबकि आंतरिक दीपक जलाने पर भीतर और बाहर दोनों आलोकित हो जाते है और जीवन का एक नई दिशा मिलती हैं जिससे जीवन में शांति मिलती है।

विद्यालय का अनुभव

संतोष कुमार
सहायक प्राध्यापक

सरकारी स्कूल में पढ़ाना बस पढ़ाना भर नही होता ये पढ़ाना होता है हालात को जिनमें हमारे बच्चें रह रहे है जी रहे है एक ही कक्षा में एक को 20 तक का पहाड़ा याद है दूसरे को गिनती तक समझ नही आती मानसिक स्तर पर देखा जाए तो हर कक्षा में 5 ग्रूप बनेगें बच्चे पर हाथ उठाना बिल्कुल अच्छा नही लगता चाहता हूँ की वे स्कूल से डरे नही स्कूल से प्यार करे पर कैसे मैं उनको गिनती सिखाने कि कोशिश कर रहा हूँ। वे खिड़की से झूल रहे होते है मैं वर्णमाला कि पहचान कराना चाहता हूँ वे पेंसिल से कटोरे पर संगीत कि प्रेक्टिस में लगे रहते है। मैं चाहता हूँ वे फूल पत्ती बादल बनाए पर कहाँ न कागज है, न रंग है, रंग है तो खैर कहि नही है जब इनकी करली बाल में सालों से तेल नही पड़ी बुरी तरह उलझे हुए है पिछले साल के यूनिफॉर्म में एक भी बटन सलामत नही है। इसकी आखों में हल्का पीलापन है कई बार कंजीटाइटीक्स का शिकार भी दिखता है। धान रोपने के वजह से पैर कि उंगलियाँ में सड़न हो गई हैं। दर्द भी है खेल – खेल में अक्सर चोटिल हो जाते है। मैं उसके साथ सक्त होने कि कोशिश करता हूँ। लेकिन असफल रहता हूँ। उनके साथ तो जिंदगी ही इतना शक्त है। स्कूल को हेडपंप एक गढ्ढे में है जिसके निचे बरसात का पानी भरा है। उस नल का पानी पीने का जी नही करता लेकिन उस बच्चे के सामने घर से ले गए पानी पीना मुझे अंदर से अश्लिल देखने के एहसास से भर देता है। जिस बच्चों को कॉपी नही रहने के कारण डपटकर पिता को बुलाने को कहा था उसके पिता है ही नही। वप्पा कही है सर पैसा होई तब आधार कार्ड बनवाई देहे।
पापा क्या काम करते है?
गोलू – कही कामे नहीं लागत है? पिता इस समय खाली हाथ है। पैसे से भी काम से भी ।

कुछ बच्चे क्रुर शब्दो में कहू तो मंदबुद्धि है। ये अतिरिक्त ध्यान चाहते है लेकिन संभव नही हो पाता ये प्यार कि भाषा समझते है। बस इसलिए हर जगह पिछे–पिछे है पढ़ाने ने बाधा होता है तो कभी कभी डांट देते है। अपनी कक्षा में जाओं ये रो पड़ते है। मै शर्मिंदगी के एहसास से भरी उठता हूँ । अपने जंगलीपन पर इनको मनाता हूँ। ये पहले के तरह फिर पिछे–पिछे लग जाता है ये अब अक्सर कॉपी, कलम नही लाते मुझे कष्ट होता है। कैसे पढ़ाउ? कैसे सिखाउ ? अक्सर ये कच्चे – पक्के अमरूद लाते है मेरे लिए कभी – कभी बेर भी बड़ी कुश्किल से हासिल ये मौसमी फल को वो अपने लिए एक भी नही बचाना चाहते है। IAS Doctor या Engineer बनने का ख्वाब मैं किन आखों से देखे हर रोज बस एक दुआ पढ़कर फुकता हूँ ईश्वर ऐसी मुसीबत में कभी न डाले कि तुम्हारे निश्छलता खो जाए इतनी ताकतवर बनो कि हर तकलीफ तुम्हारे आगे घुटने टेक दें। बस यहीं दुआ है।

Role of Research in Teacher Education

Arpana Kumari
Asst. Professor

Research plays an important role to lead improvement on the achievement from academic knowledge to post training and interchanging curriculum of Teacher education on the aspect of modification and development of newer research which determine for being effective and efficient teacher till starting to present time . Teacher education is a system in which improving the general education background , increasing their knowledge , understanding of the subject as pedagogy and learner and development of skill in trainees .Teacher education is a way that bring change within educational system day by day .Teacher education has two main aspect one is to get qualification according to Primary to secondary level in one or more subject , another is refers to the policy , Provision designed , to equip teacher with knowledge , attitude and different types of competencies view to subject .Mainly skill are showing on two types – one is teaching skill that include technique , approaches , strategies , method related to subject matter . Another is Professional Skill include different types of competencies as soft skill , counseling skill , interpersonal skill ,computer skill etc .The development of Teacher Education depend on the research that is responsible for changing and developing various aspect of Education from earlier time .Research is a process of systematic & in depth study of particular topic / problem and create new knowledge , changing in old concept , use of existing knowledge etc . Research was Growing up in Teacher education by establishment of NCERT (1961) & NCTE (1998) .Generally , Educational research has three forms- Fundamental research emphasis on theory ,fact , in which searching new theory , transformation of theory , and revised laws that proved to be helpful to collect / increase knowledge .Applied Research related to behavioral problem in present time that include use of method , strategies ,new innovation of teaching learning , developing various competencies & need of evaluation in education etc. But while Action Research bring at new trend in classroom teaching that emphasis on current problem happening in classroom / school during teaching learning process . So Research have potential to bring change within educational system That increase the knowledge , creation of new skill , transforming new ideas/ technique for global education.

‘‘शिक्षा’’

शम्भु कुमार शर्मा
सहायक प्राध्यापक

शिक्षा एक अनवरन् चलने वाली प्रक्रिया हैं, जो अंतिम सांस तक चलती रहती है। शिक्षा की उत्पति संस्कृत के ''शिक्ष्'' धातु से हुई हैं, जिसका अर्थ होता है, 'सीखना' और 'सीखाना'।

शिक्षा एक व्यक्ति को अपनी क्षमता का पता लगाने में मदद करती है, जो बदले में एक मजबूत और एकजूट समाज को बढ़ावा देती है। इसका उपयोग करने से इनकार करना किसी भी व्यक्ति को एक पूर्ण इंसान बनने में बाधा उत्पन्न कर सकता हैं। परिवार, समुदाय, राज्य और देश को बड़े स्तर पर ले जाने के लिए मानव समाज के हर स्तर पर शिक्षा का महत्त्व बहुत ही आवश्यक हैं। स्त्री हो या पुरूश, सभी बने साक्षर अपने समाज को पूर्ण विकास के लिए शिक्षा के प्रति जागरूक रहें।

शिक्षा को शब्दों में बांध पाना उतना ही कठिन हैं, जितना कि सागर को मुठ्ठी में बंद कर लेना।

अंत में मैं इतना ही कहना चाहुँगा कि शिक्षारूपी अस्त्र से हम चट्टानरूपी समस्याओं को भी आसानी से चकनाचुर कर सकते हैं।

''जय बिहार–जय भारत''

संजीव कुमार
सहायक प्राध्यापक

उठो विद्यार्थियों यह करे के दिखा दो
तूफानों में जीवन के दीपक जला दो

मेरे देश में यह अंधेरा रहे न
जहाँ गरीबी का डेरा रहे न
इन्सान से इन्सान की यह दुश्मनी मिटा दो

आये झूम कर यहाँ बहारों से कह दो
सूर्य चाँद नन्हे सितारों से कह दो
मेरे देश को फिर से तुम जगमगा दो ।

साहसी बन कर ही सब कुछ मिलेगा
मेहनक और बल बुद्धि में जीवन खिलेगा
संजीव कहता है वतन के लिए बाजी जान की लगा दो।

शिक्षा और जीवन

गीत

गीत – संजीव कुमार सिंह — राग – शिवरंजनी
संगीत – संजीव कुमार सिंह — ताल – कहखा

शिक्षा बिन इन्सान नहीं है।
शिक्षा के बिन मान नही है।।

शिक्षा में नुकसान नहीं है।
शिक्षा से तो शान है प्यारें,
शिक्षा से तू बेमुख क्यों है। –2
शिक्षा सुख की जान है प्यारे–2
शिक्षा बिन ....
शिक्षा सुख ....

शिक्षा में आनंद भरा है।
शिक्षा से तो देश खड़ा है।
शिक्षा का तो मान बड़ा है । –2
शिक्षा से उत्थान है प्यारे
शिक्षा बिन ....
शिक्षा सुख ....

शिक्षा के बिन तन – मन कैसा
शिक्षा के बिन यह घन कैसा
शिक्षा के बिन जीवन कैसा – 2
शिक्षा का ये सार है प्यारे
शिक्षा बिन ....
शिक्षा सुख ....

मीना कुमारी
सहायक प्राध्यापिका

मिथिला प्राचीन भारत का एक राज्य था। मिथिला वर्तमान में एक सांस्कृतिक क्षेत्र है। जिसमें बिहार के प्रमंडल के साथ – साथ नेपाल की तराई के कुछ भाग भी शामिल है। मिथिला की लोकश्रुति कई सदियों से चली आ रही है, जो अपनी बौद्धिक परम्परा के लिए भारत और भारत के बाहर जानी जाती है।

भोरे – भोरे कोइली कूके –2 सूरज करे प्रणाम।
कमला, कोसी चरण पखारे, एहन मिथिला धाम।

मिथिला की मूल भाषा मैथिली है जो हमारे संविधान में भी प्राप्त एवं मान्य है। जो सुनने एवं बोलने में कर्णप्रिय, मधुर प्रतीत होता है। यहाँ की प्राचीन शहर जनकपुर जो प्राचीन मिथिला की राजधानी हुआ करती थी। हिन्दू धार्मिक ग्रंथों में सबसे पहले इसका संकेत शतपथ ब्राह्मण में तथा स्पष्ट उज्जलेख बाल्मीकीय रामायण, महाभारत पुराण तथा जैने और बौद्ध ग्रंथों में हुआ है।

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि पूब कौशिकीधारा
पश्चिम बहथि गंडकी उत्तर हिमवत वन विस्तारा।।

जहाँ एक ओर मिथिला की संस्कृति विश्व विख्यात है, वही दुसरी ओर इतिहास साक्षी (गवाह) है, कि मिथिला की धरती पर कई ऋषि, महर्षि, विद्वानों, विदुषियों के लिए जानी जाती है। जनक, सीता, विद्यापति, याज्ञवल्कभ आयाचि, काली दास, मंडल मिश्र, भारती तथा गार्गी का चरित्र–चित्रण हमारे परेणा का स्त्रोत रहे है। इन कवियों विद्वानों के अनमोल कृतियाँ से हम आत्मविभोर आनन्दित होते हुए प्रतिबद्ध होते है, कि भाषा का प्रसार एवं आत्मसात् भवष्यिगत योजनाओं, लक्ष्यों के लिए करे।

पग – पग पोखर, पान, मखान
सरस बोल, मुस्की मुस्कान
विद्या –वैभव शांति प्रतीक
ललित नगर दरभंगा थिक

मिथिला के संस्कृति में कुछ पर्व त्योहार का भी लोक प्रियता है। यहाँ पर्व त्योहार को बड़े विद्यि – विद्यान द्युम–द्याम तथा पवित्रता के साथ मनाया जाता है। यहाँ का प्रमुख पर्व, त्योहार चौरचन, कोजागर, मधुश्रावणी, जुड़शीतल सामाचकेवा आदि है। तो वही लोक कला की भी परम्परा है। जैसे – कोहवर, सौराठ सभा यानी दुल्हो का मेला, प्राचीन काल से लगती आ रही है।

नरेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक

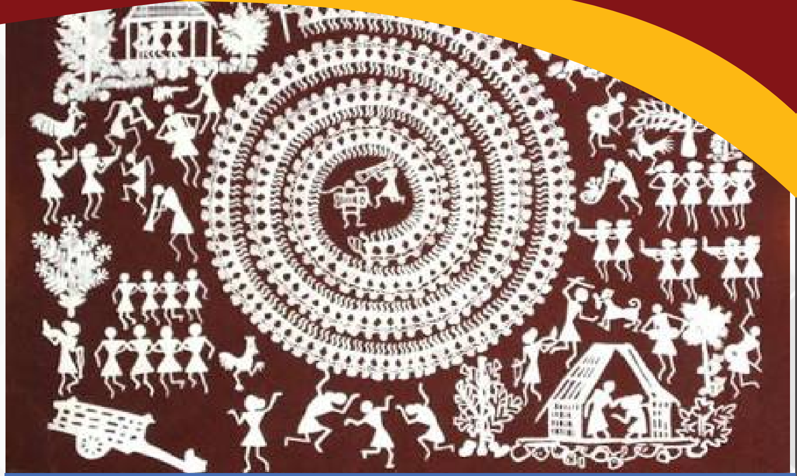

चलें कला की ओर

जीवन एक कला है। मानव जीवन और कला में अन्योन्याश्राय संबंध है। मानव जीवन से यदि कला को हटा दिया जाए तो मानव एवं अन्य प्राणियों में कोई अन्तर नहीं रह जायेगा। कला के माध्यम से ही मानव अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है। जीवन के विभिन्न क्षेत्र में कला के माध्यम से ही हमारा विकाश संभव है। प्रकृति स्वयं में कला का अक्षय भंडर है प्रकृति का हर उपादान अपने आप में कला की अदभुद संपत्ति संजोये हुए है। प्रकृति के रंगों में डूब कर ही कवि की कविता फूटती है, चित्रकार के मन में चित्र बनाने की प्रेरणा जगती है जिसे वह अपनी तूलिका से साकार करता है।

बालक जब अपनी पढ़ाई आरम्भ करता है तब अक्षर बोध से पहले वह चित्रों के माध्यम से ही ज्ञान प्राप्त करता हैं किसी भी कार्य को यदि कलात्मक ढंग से किया जाय जो वह श्रेष्ठ बन जाता है।

कला का महत्व भूत, वर्त्तमान एवं भविष्य के लिए एक समान है। कला ही वह सवोत्तम माध्यम है। जिसके द्वारा हम अपने इतिहास का ज्ञान प्राप्त कर वर्त्तमान में आगे बढ़कर भविष्य को उज्ज्वल बना सकते है। विभिन्न पुरातात्विक खुदाईयों से हमें जो अवशेष और जानकारी मिली है, वह उस समय के कला की ही देन है। कला ही वह माध्यम है जिससे हम अपने धर्म एवं संस्कृति की यादगार को सुरक्षित एवं संरक्षित रख सके हैं, चाहे वह लेखन कला हो, चित्र कला हो अथवा मूर्ति कला। यह कला की ही देन है जिसके माध्यम से हम विभिन्न देवी–देवताओं, ऋषि–मुनियों, महान व्यक्तित्वों एवं अपने पुरखों को जान पा रहे हैं, अन्यथा समय के साथ – साथ उनकी यादगार भी विलुप्त हो गई होती।

व्यक्ति के व्यक्तित्व के साथ – साथ समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में भी कला की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जिस तरह साहित्य समाज का दर्पण है उसी तरह कला के द्वारा भी हम तत्कालीन समाज के रहन – सहन, सामाजिक व्यवस्था एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करते है।

कलाकारों ने समय–समय पर अपने विभिन्न कला के माध्यमों से समाज एवं राष्ट्र में जागृति लाने एवं उसमें नई चेतना भरने का प्रयास करता रहा है।

''कलम देश की बड़ी शक्ति है, भाव जगाने वाली, दिल ही नही दिमागों में भी आग लगाने वाली। पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे, और प्रज्जलित देश प्राण क्या कभी मिटेगा मारे।''

कला मानव हृदय में कोमलता भर देती है। कलाकार का संपूर्ण जीवन सरल एवं कला ही साधना में समर्पित रहता है। यदि प्रारम्भ से ही मानव के हृदय में कला के प्रति प्रेम जागृत हो जाय, तो उसके हृदय में कभी कुविचार एवं नृसंसता उत्पन्न नहीं हो सकता, जो समाज एवं देश के भविष्य के लिए अमूल्य धरोहर होगा और हमारा समाज सदा उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहेगा। कला के उत्थान के लिए हमें सदा तत्पर रहना चाहिए, इसी में देश एवं समाज की भलाई है।

''जो भरा नहीं है भावों से, उसमें बहती रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें कला से प्यार नहीं।।''

समान विद्यालय शिक्षा प्रणाली

Mukesh Kumar
Asst. Professor

सन् 15 अगस्त 1947 में भारत को जब स्वतंत्रता मिली तो यहाँ के तत्कालीन राष्ट्रनेताओं ने अपने संविद्यान का निर्माण किया। 26 नवम्बर 1949 को इसे अंगीकार कर लिया गया तथा 26 जनवरी 1950 को इस संविधान को लागु किया गया। संविद्यान के प्रस्तावना में देश के समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, न्याय दिलाने, उनकी प्रतिश्ठा बढ़ाने तथा अवसरों की समानता दिलाने हेतु समानता, शिक्षा तथा स्वतंत्रता आदि जैसे कुछ मौलिक अधिकार दिये गये। भारतीय संविधान हर भारतीय नागरिकों को समान दृश्टि से देखता है। राज्य और उसके कानुन की दृश्टि में किसी भी व्यक्ति के साथ उसकी जाति, लिंग, धर्म तथा उसके गरीब या अमीर होने के आधार पर कोई भेदभाव नही किया जा सकता । आज स्वार्थवश गलत मतलब निकाल और उनका दुरूपयोग करते हैं।

अनुच्छेद – 45 के अनुसार – सारे राष्ट्र में संविधान लागु होने की तिथी से आगामी 10 वर्षों में चौदह (14) वर्ष तक के बच्चों के लिए सरकार निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करेगी। अतः संविद्यान के अनुसार यह कार्य सन् 1960 ई० तक पुरा होना था परन्तु उनेक कारणों से अभी तक अधुरा है।

नवंबर 2001 के संविधान संशोधन विद्येयक को पारित कर 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों को अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने हेतु शिक्षा को मौलिक अधिकार में शामिल किया गया।

12 दिसम्बर 2002 को 86 वाँ संशोधन विद्येयक पारित कर धारा – 21 (ए) के अनुसार – राज्य 6 से 14 वर्ष तक की आयु वाले बच्चें के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने का प्रबंध करेगा।

धारा – 21 के अनुसार – हर व्यक्ति को सम्मान पूर्वक जीने का अधिकार है। इसके फलस्वरूप शिक्षा को एक आवश्यक शर्त माना गया।

उपरोक्त सभी अनुच्छेदों तथा धाराओं को विश्लेशण करने पर हमें यह ज्ञात होता है कि हर व्यक्ति को सम्मानपूर्वर्क जीने का अधिकार है जिसके फलस्वरूप शिक्षा को एक आवश्यक शर्त माना गया है। अगर हम समान रूप से सम्मापूर्वक जीने का अधिकार के लिए शिक्षा को आवश्यक शर्त मानते है तो इसका एक ही सरल और कारगर उपाय हैं– समान विद्यालय शिक्षा प्रणाली Comman School Education System.

जिसे सामान्य भाषा में कह सकते है कि – एक ऐसी शिक्षा की व्यवस्था जो पूर्व प्राथमिक से लेकर उच्च माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा जो पूर्णतः निःशुल्क और अनिवार्य हो जो पुरी तरह से सरकारी हो। जिसमें बच्चों की रूचि, संस्कृति तथा भाषा को ध्यान में रखते हुये पुरे भारतवर्ष में एक समान पाठ्यक्रम निर्धारित हो। जिसमें देश के सभी बच्चें को समान रूप से चाहे वो गरबी हो या अमीर, चाहे वो किसी भी धर्म या जाति से हो, चाहे उसका रूप रंग कैसा भी हो, चाहे वह शारीरिक रूप से स्वस्थ हो या दिव्यांग उसे शिक्षा पाने का अवसर मिले। पूरे भारत वर्ष में उच्च माध्यमिक स्तर तक निजी विद्यालयों का नामों निशान तक न हो और सिर्फ सरकारी तंत्र समान विद्यालय शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाय।

इसका निकट भविष्य में सुखद यह परिणाम होगा कि आरक्षण रूपी लकवा बीमारी से मुक्ति मिल जायेगी। Reservation is a paralysis जैसी उक्ति से मुक्ति मिल जायेगी। कोई भी बच्चे / बच्चियाँ अपने माता – पिता अभिभावक या सरकारें पर दोश या शिकायतें नहीं कर सकेगीं क्योकि सभी को समानरूप से शिक्षा का अवसर मिल सकेगा। और वो अपनी परिश्रम और योग्यता के अनुरूप अच्छ शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा या सरकारी / निजी नौकरियों में सेवा दे सकेगे।

इस प्रकार समान विद्यालय शिक्षा प्रणाली एक ऐसे विद्यालय तंत्र की परिकल्पना है, जहाँ गरीब और अमीर के बच्चे एक छत के नीचे साथ – साथ पढ़ें – लिखें और खेले–कुदें। इसका मुख्य उदेश्य जाति, धर्म, लिंग, रंग – रूप, शारीरिक रूप से स्वस्थ या दिव्यांग, या स्थान का भेद किये बिना सभी बच्चें को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा मुहैया कराना है। जिसमें कम से कम इतने संसाद्यन जरूर हो जिससे तुलनात्मक रूप से बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, करायी जा सके जो पूर्णतः निःशुल्क और अनिवार्य हो। इससे समाज में समानता का भाव दिखेगा आपस में किसी भी प्रकार का सामाजिक आर्थिक या अन्य किसी भी प्रकार का हीन भावना महसुस नहीं होगा। समान विद्यालय शिक्षा प्रणाली के माध्यम से सभी को समान रूप से शिक्षा का अवसर प्रदान होगा। जो जितना परिश्रम करेगा। वह उतना ही शिखर पर पहुँचेगा।

श्वेता कुमारी
सहायक प्राध्यापिका

विद्यार्थी जीवन और अनुशासन

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का बड़ा महत्व है। आज का विद्यार्थी राष्ट्र का भावी निर्माता है। वैसे तो विद्यार्थी जीवन भर कुछ न कुछ सीखता ही रहता है, लेकिन विद्यार्थी जीवन में व्यक्ति जो कुछ भी सीखता है,उसी पर उसका भावी जीवन निर्भर होता है। विद्यार्थी और अनुशासन का आपस में गहरा सम्बन्ध है। बिना अनुशासित हुए विद्यार्थी ठीक से विद्या ग्रहण नहीं कर पाता।

अनुशासन ही उन्नति का द्वार है। अनुशासित व्यक्ति के मन की चंचलता समाप्त हो जाती है। उसकी शक्तियों का दुरूपयोग नहीं हो पाता। वह दिन दूनी –रात चौगुनी उन्नति करने लगता है।

आजकल हमारी युवा पीढ़ी अनुशासन से विमुख हों रही है, यह बहुत ही चिंता का विषय है। छात्रों में अनुशासनहीनता पनपने के कई कारण है। – अभिभावकों और शिक्षकों के बीच संपर्क का अभाव, अध्यापकों का अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक न रहना, ऐसी कारण है जिनसे छात्रों में अनुशासनहीनता पनपने लगती है।

अनुशासनहीनता बहुत हद तक दूर हो सकती है, शिक्षा पद्धति में परिर्वतन करके, ऐसी शिक्षा होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों का नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक विकास हो सकें, और वे जीविकोपार्जन के योग्य बन सकें । इन सबसे विद्यार्थियों में असंतोष बहुत हद तक दूर हो जाएगा। उनमें अनुशासन के प्रति लगाव उत्पन्न होगा।

अभिभावक और अध्यापक दोनो मिलकर छात्रों के नैतिक विकास की ओर विशेष रूप से ध्यान दे, ताकि विद्यार्थी अनुशासन के महत्व को समझे।

यदि हमें राष्ट्रको अनुशासित बनाना है, तो नयी पीढ़ी को छात्र जीवन से ही अनुशासन का पाठ पढ़ाना होगा, तभी स्वस्थ समाज और दृढ़ राष्ट्र की कल्पना साकार होगी।

Self - awareness

Guriya Jha
Asst. Professor

From the ancient Greek Aphorism know thysels to the western psychology the topic of self awareness has always been an interouing suniets of inquiry of philosophers and psychologist for the last century. In 1972 Psychologist shelley Duval and Robert wicklunds develop the theory of self awarness when we focus our attention on ourselves. We evaluate and compare our current behavior to our internal standard and value we become self consious as objective evaluators of ourselves. Self awarness, in his best selling book emotional intelligence as knowing one's internal states. preference, recources and intuitions. This definition explain ability to monitor our inner world our thoughts and epntions as they arise self awarness is not only about what we notice out aurselves but also how we notice and monitor inner world.

Self awarness goes beyond merely accumulating knowledge about ourselves. It is also about paying attention to our inner state with a biggnners mind and an open heart jean piaget theories of conginitie development which explain self awarness develope systematically from birth through the life span.

Importance of self awarness:

Self awarness is important because when we have better understanding of ourselves we able to experience ourselves as unique and separate individual we are then empowered to make change and to build on our areas of strenth as well as identify areas wher we would like to make improvements.

Way to improve self awarness.

1. Look at yourself objectively.
2. Keep, a Journal
3. Write down your goals, plan, and priorities.
4. Perform daily self reflection.

Parth Ghosh
Asst. Professor

Physical Education

In order for man to succeed in life, God provided him with two means, Education and Physical activity. Not separately, one for the soul and the other
For the body, but for means, man
Can attain perfection.
Regular physical activity can help children and adolescents improve cardio respiratory fitness, build strong bones and muscles, control weight reduce symptoms of anxiety and depression, and reduce the risk of developing health conditions such as:
Heart disease.

Reecha Sinha
Asst. Professor

Value of Education

Education helps us to realize our flaws and correct them. Knowledge we acquire in one light will stand us in good stead for seven births. When we are in difficulty, our education and knowledge will come to our rescue.

Those who seek the company of the learned are to be treated with as much respect as the learned themselves. "The flame of a lamp is not huge, and yet we light lamps and worship them". Likewise, educated people may be small in physical stature, or they may be poor. But people will show them more regard than they would to a rich man who has no education.

"माँ"

पहले जब मैं धबराती थी,
आँचल में तेरे छुप जाती थी।
गजब सी ताकत आ जाती थी,
जब तेरी हाथ मुझे सहलाती थी।।

घबराहट तो आज भी होती है,
पर किसी को नहीं बता पाती हूँ।
डर को जीभो में छुपाकर,
चादर ओढ़ सो जाती हूँ।।

जब दोस्त मुझे रूलाते थे,
तो उनका शिकायत तुमसे लगाती थी।
फिर तेरी गोद में सिर रखकर,
मासूमियत से सो जाती थी।।

दिलतो आज भी दुखता है,
पर आसुओं को आँखो में ही रखना, सीख गइ।
गलतियाँ तो आज भी करती हूँ,
पर गलतियाँ को सुलझाना खुद ही सीख गइ।

अब जब मैं तुमसे मिलने आऊगी,
सबी शिकायत तुझसे लगाऊगी।
तू सिर पर हाथ रख देना फिर से
और मैं फिर से तरी गोद में सो जाँऊगी।।

Jyoti Kumari
B.Ed, 1st year
Session - 2018-20

जिंदगी

इन अंधेरों में मुझे एक रौशनी सी दिखती है
कही ये मेरी जिंदगी तो नही!

जैसे वादियों में शामिल कोई नमी सी दिखती है
कही ये मेरी जिंदगी तो नही!

मै तन्हा बैठी हूँ, किसी पेड़ की छाँव में और
वो फूल की कली सी दिखती है
कही ये मेरी जिंदगी तो नही!

हो शामिल जैसा हर जश्न में एक खूशी और
वो ख्वाबों की परी सी दिखती है ..
कही ये मेरी जिंदगी तो नही!

जब हर चीज को परने को मचलती हूँ मै,
और वो खिलखिलाती एक तितली सी दिखती है...
कही ये मेरी जिंदगी तो नही!
कही ये मेरी ....

काजल कुमारी
सत्र – 2018 – 20
बी० एड०, प्रथम वर्ष

हमर गाम

अल्पज्ञानक मुदा ही मैथली सुत
सूनू हमर मेल ' रामभद्रपुर' गाम
हमर नाओं सुनने नहि होयवा
मुदा की बिसरल 'उरयत' नाम
जनिक प्रभावे बचल सनातन
ओ हम्मर करियन के लाल
बाल – काल सँ नित्य लगाबी
हुनक मँाटि सब जन जि भाल
हमर गाम के उत्तर पश्चिम
जनमल ''सुमन'' भाषा के संत
जनिक साहित्यसँ मेली मैथिली
चरकालिक लेल अति – गुणमंत
पश्चिम –दक्षिण वास ''आरसी''
गीत – प्रगीतक एक शृंगी
सीधे पश्चिम बढ़बै जखने
भंटथि ''स्नेहलता'' भृंगी
एहि सँ बेसी की देव पश्चिय
हमरो गाम अंग मिथिला
चलू अहींकें पाछें चलि – चलि
देखब रंग बिरंग मिथिला।
जिला जयवारसँ की होई है यौ
उत्तर – दक्षिण ध्रुव के अंश
हमहूँ उत्तरेसँ आबि बसलहुँ
बाँचल बसल कैथिनियामें वंश
हाँ! मधुबनी के भास मधुर है
ई त हृदय सँ मानै ही
मुदा गंग धरि पसरल मिथिला
संग – संग ईहो जाने छी...
बालकाल सँ देखलियनि पिताकैं
अपन सक्क धरि काव्य लिखैत
लिख 'लागलहुँ हेरियौ खगता
बढ़व अहीसँ काव्यलोच सिखैत!

आशीष कुमार झा
बी० एड०
सत्र 2018–20

दरख्त (पेड़) की फरीयाद

नन्हीं सी एक कली हूँ मैं।
जमीं के नीचे पली हूँ मैं।।
डर लगता हे, बड़ें होने से।
अपने लम्बे – लम्बे तने खोने से।।

करते हैं, हम सब का भला।
फिर क्यों देते है, हमें सजा।।

काटकर हमें हैं, ये मारते।
लगता हमें हैं, अपना जीवन सँवारते।।
शायद शोच नहीं पाते, ये बेचारे।
इनकी साँसे हमसे ही हैं चले।।

जीवन की हर उम्मीद हैं, हमसे बनी।
हमसे ही मिलती, इन्हें फल – फूल और हरी सब्जी।।

दवाईयाँ भी बनाते हैं, ये हमसे।
खुद पे तो काबु नहीं रहता है इनका।।
और जमी को भी नहीं कर सकते है बड़ा।
बढ़ती इनकी आबादी पे क्यों कम हो,
रही, हमारी संख्या।।

हमसे ही है, इनका जीवन संसार।
से जानकर भी क्यों लोग बनते है अंजान।।

अब बस भी करों, ऐ इंसान।
अब बस भी करों, ऐ इंसान।

वागेश्वरी कुमारी
बी०एड०

पथ - प्रदर्शक

हम हैं बच्चों के भविष्य निर्माता,
बच्चों को आगे बढ़ाये गे,
आएँ सौ तूफान सामने,
रोक न उनको पाएँगे।

हम है बच्चों के मार्गदाता,
बच्चों को आगे बढ़ायेंगे,
हमें न समझों यूँ ही,
हम उनका भविष्य बनायेंगे।

हम है बच्चों के जीवन का अहम हिस्सा ,
अच्दे बुरें की समझ उनको सीखायेंगे,
आएँ सौ तुफान सामने,
रोक न उनको पाएँगे।

हम है बच्चों में उम्मीद जगानेवाला
कल्पना की आग उनमें सुलगायेंगे,
बच्चों को आगे बढ़ायेंगे,
ज्ञान के प्रति उनको मन में प्रेम बिठायेंगे।

हम है बच्चों को प्रेरित करनेवाला,
ज्ञान के लिए उनको प्रोत्साहित करेंगे,
आएँ सौ तूफान सामने
रोक न उनको पाएँगे।

सुमन कुमार राय
बी० एड० 2018 – 20

''शिक्षक''

कारे कागज को पुस्तक बनाता है शिक्षक,
नन्हें पौधें को ज्ञान से सींचता है शिक्षक।
न खून के रिश्ते से बंध होता है शिक्षक
फिर भी अहम किरदार निभाता है शिक्षक।

जीवन को नये आयाम दिखाता है शिक्षक,
बालकों का सखा बन दुख हरता है शिक्षक।
अज्ञान के अंधेरे में दीप जलाता है शिक्षक,
खेल – खेल मं सदाचार पढ़ाता है शिक्षक।

हौंसला देकर पथ में आगे बढ़ाता है शिक्षक,
कभी माँ बन नई – नई सीख देता है शिक्षक।
जिज्ञासा की लहरों को शांत करता है शिक्षक,
छीपी प्रतिमा को चार चाँद लगता है शिक्षक।

विद्यालय में खुशबू बन महकता है शिक्षक,
मंजिल की राह को आसान बनाता है शिक्षक।

पिंकी कुमारी
बी० एड० 2018 – 20

शिक्षा की समृद्धि व विस्तारीकरण का सशक्त माध्यम -सूचना संचार प्रौद्योगिकी

वर्तमान समय में तेजी से ग्लोबलाइजेशन हो रहा है, शिक्षा की उपयोगिता व विस्तारीकरण भी इस कारण तेजी से बढ़ रहा है। इन्टरनेट के आविष्कार ने सूचना संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा को सर्वसुलभ बना दिया है। देश की आजादी के 72 वर्ष बाद भी सभी नागरिक शिक्षित नही हो पाये है। सरकार ने समय समय पर अनेक शिक्षा नीति बनाई वह अनेक कार्यक्रम चलाई, ताकि सभी को शिक्षा दिया जा सके परन्तु देश की भौगोलिक विषमता व शिक्षा के क्षेत्र में संसाधन का घोर अभाव ने सबको शिक्षित करने के मंसुबो पर पानी फेर दिया। इन संसाधों की कमी को पूरा करने का सबसे सरल व एकमात्र विकल्प इन्टरनेट हो सकता है। यही कारण है कि केरल देश का सबसे शिक्षित राज्य है क्योंकि इस राज्य में सूचना संचार प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता की संख्या सबसे ज्यादा है। अतः आवश्यकता है कि वर्तमान चुनौतियों को देखते हुए नई शिक्षा नीति का निर्माण हो जिसमें सूचना संचार प्रौद्योगिकी के लिए विशेष आवंटन हो।

<u>राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी</u> ने सात सामाजिक पापकर्म में एक मानवता के बिना विज्ञान का उल्लेख किया है। हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान सामाहित है विज्ञान ने हमें अनेक विध्वंसक हथियार, परमाणु बम से लेकर चिकित्सा, सुरक्षा व शिक्षा के क्षेत्र में अनेक आवश्यक उपकरण दिये है। मानवता ही हमें विज्ञान की सही उपयोग बताती है ताकि हम सोशल मीडिया पर अफवाहों की जगह शिक्षा का प्रचार करे।

मानव जीवन का कोई भी क्षेत्र चाहे वो शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, खेल – कूद रोजगार की तलाश, यातायात अंतरीक्ष अनुसंधान आदि ही क्यों न हो सूचना संचार प्रौद्योगिकी से अछूता नहीं है। इन्टरनेट पूरी दूनिया में किस कदर लोगों के जीवन का अहम हिस्सा बन गई है इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पूरी दूनिया में लगभग सात अरब आबादी में इन्टरनेट उपयोगकर्ता की आबादी तीन अरब से भी जयादा है। सूचना संचार प्रौद्योगिकी ने चिंतित्सा के क्षेत्र में आशातीत सफलता पाई है। कम्प्यूटर से अनेक लाईलाज बीमारियों की पहचान, अल्ट्रासाउण्ड, सीटी –स्कैन समेत शरीर के अंदरूनी हिस्सों का इलाज आसान हो गया है। आज हम रोबोटिक सर्जरी तक पहूँच गये है। कृषि क्षेत्र, देश की आंतरिक सुरक्षा, यातायात व अंतरीक्ष अनुसंधान में सूचना संचार प्रौघेगिकी के उपयोग ने अनेक पूर्वाग्रह को झूठला कर नवीन सूचनाओं को प्रदान किया है जिससे हमारा जीवन सुलभ बन गया है। शिक्षा के क्षेत्र में सूचना संचार प्रौद्योगिकी ने शिक्षा की गुणवत्ता को समृ किया है व शिक्षा को सही लोगों के लिए सर्व सुलभ बताया है, सूचना संचार प्रौद्योगिकी से शिक्षा के क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव निम्नलिखित है –

1. वर्गकक्ष में अधिगम में सुगमता :– परंपरागत वर्ग कक्ष में शिक्षक पढ़ाने के लिए श्यामपट्ट का इस्तेमाल करते थे जिसमें कई कठिनाईयाँ आती थी उदाहरण के लिए जीव विज्ञान के शिक्षक को पुष्प की संरचना पढ़ाने के लिए पुष्प का चित्र श्यामपट्ट पर बनाना पड़ता था जिससे कक्षा में दूर बैठा छात्र ठिक से देख नही पाता था। परन्तु अब वर्ग कक्ष में प्रोजेक्टर के माध्यम से पुष्प का बड़ा चित्र ही नही बनाया जा सकता बल्कि उसके सभी भागों को अलग –अलग अच्दे से समझाया जा सकता है। इसी तरह अन्य विषय में भी सूचना – संचार प्रोद्योगिकी के उपयोग से शिखा के गुणवत्ता का स्तर बढ़ा है।
2. तथ्यपकरक सूचना ऑनलाइन प्राप्त करना :– इन्टरनेट के द्वारा छात्र फेसबुक, ट्वीटर, यूटयूब आदि सोशल नेटवकिंग साइट्स के माध्यम से सूचना का आदान – प्रदान करते है, तथ्यपरक सूचना प्राप्त कर सकते है, घर बैठे परीक्षा की तैयारी कर सकते है तथा अपने शिक्षा का स्तर प्राप्त कर सकते है।
3. ऑनलाईन पढ़ाई करना :– सूचना संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से छात्र घर बैठे जे० एन० यू०, डी० यू०, कैंबिज ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के शिक्षक समेत दूनिया के किसी भी शिक्षाविद से पढ़ सकता है तथा विश्व स्तर पर प्रतियोगिता में शामिल हो सकता है।
4. पाठ्यक्रम में रोचकता लानाः – सूचना संचार प्रौघोगिकी ने निरस पाठ्यक्रम में परिवर्तन लाकर पाठ्यक्रम को रोचक बना दिया है जिसे अधिगम का स्तर समृद्ध हुआ है।
5. मनोवैज्ञानिक अध्ययन के द्वारा पढ़ाई :– बड़े –बड़े विद्यालय में छोटे बच्चों को सी.सी.टी.वी. कैमरे के द्वारा निगरानी कर उसके मनोवैज्ञानिक रूझान का पता लगाया जाता है जिससे अधिगम सुगम हो जाता है।
6. स्मार्ट वर्ग कक्ष में शिक्षण :– वर्तमान में स्मार्ट वर्ग कक्ष का प्रचलन बढ़ा है सूचना संचार प्रोद्योगिकी के माध्यम से स्मार्ट बोर्ड, अत्याधुनिक उपकरण से सुसज्जीत वर्ग कक्ष संचालित किया जाता है जिससे सूचना शुद्ध रूप से प्राप्त होती है व अधिगम की सुलभ बन गया है।
7. ई–लाइबेरी का विकास : शिक्षा के क्षेत्र में इन्टरनेट के विकास के साथ ई –लाईबेरी का विस्तार भी हुआ है जिससे अनेक दुर्लभ पूस्तक तथा पाण्डुलिपि आसानी से उपलब्ध हो जाती है।

डिजिटल इण्डिया के इस दौर ने वर्तमान में जिस दुर्गम व पिछड़े इलाके में स्कूल – कॉलेज का निर्माण संभव नही है वहाँ भी सूचना संचार प्रौद्योगिकी घर –घर शिक्षा का अलख जगाने में सक्ष्म है। यह कहना अतिशियोक्ति नही होगी कि आने वाले पाँच छह दशकों के बाद पढ़ाने के लिए वर्ग कक्ष में I शिक्षक होंगे ना ही छात्र । इस हाईटेक यूग में शिक्षा ऑनलाईन रूप में घर – घर उपलब्ध रहेगी। ऑन लाइन शिक्षा के क्षेत्र में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का विशिष्ट्ायदा यह है कि शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावक सयुक्त रूप से अपने समस्या समाधान व सूचनाओं को साझाा करते है। अनेकानेक शिक्षकों के लेख साइट्स पर लोकप्रिय व प्रसिद्ध है जिन्हें लाखों विद्यार्थी ऑनलाईन अपना रहे है। शिक्षा मनोवैज्ञानिक हॉवर्ड गार्डनर के अनुसार " अच्छी समझ के लिए विद्याथ्रियों को अपने ज्ञान को विविद्य रूपों में प्यक्त करने के अवसर देना ज्यादा अच्छा होता है। " अतः ऑन लाइन शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के अनुरूप है। शिक्षा के इस बदलते स्वरूप के चलते अब कोई भी छात्र अपनी मेहनत के बदौलत 'एकलव्य' बन सकता है तथा दुनिया को चुनौती दे सकता है।

सावधानियाँ :– सूचना संचार प्रौद्योगिकी का लाभ के साथ –साथ कुछ दोष भी है जिसे हमें दूर करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए छात्रों में इन्टरनेट का प्रयोग व्यसन का रूप ले रहा है जिससे छात्र कम उम्र में शारीरिक व मानसिक विकृति का शिकार हो रहे है। साथ ही वर्ग कक्ष में पढ़ाते समय चैटिंग करना, अश्लील सूचनाए अपलोड करना, अफवाहों को फौरवार्ड करना आदि अवगुण हमारे लिए खतरनाक है। हमें मानवता के लिए इन दूर्गुणों को समाप्त करना होगा।

निष्कर्ष :– इस प्रकार सूचना संचार प्रौद्योगिकी शिक्षा के नये रूप में हमारे लिए वरदान है। यह मानव जीवन को किस ऊँचाई पर ले जाएगा इसकी कल्पना करना हमारे लिए मुश्किल है। शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि व विस्तार के साथ – साथ मानव मूल्य पर आधारित विश्व – बंधुत्व की आधारशीला यदि स्थापित होगी तो उसका एकमात्र माध्यम सूचना संचार प्रौधेगिकी होगा। यह समूचे विश्व को एक गाँ में बदल देगा।

पूनम कुमारी
बी० एड० 2018–20

"नारी सशक्तीकरण : सपना विकास का"

नारी ईश्वर की बनाई गई सबसे सुंदर कलाकृतियों में से एक है। कहते है, जब ईश्वर ने धरती बनाई तो सबसे पहले उसने महिला की रचना की होगी, क्योंकि नारी जननी है, माया है, ममता है और मुक्ति का आधार है। वही वास्तविक वास्तुकार है। नारी की रक्षा हेतु और उसके साथ जीवन रचना हेतु ईश्वर ने पुरूष को बनाया , लेकिन यही पुरूष ना जाने कब रक्षक से भक्षक बन गया। हर काल मे उसने नारी का शोषण किया, उसके अस्तित्वको नकारा और उसे समाजिक कुरूतियों के पिंजड़ें में बाँधकर रखा। बड़ी विडंबना है, जहाँ प्राचीन काल से ही

"मंत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता"

की कहावत प्रसिद्ध है, वहाँ एक नारी को हर पल अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना परता है। इतिहास साक्षी है, यदि नारी को पुरूषों की भॉति बराबरी का दर्जा मिला होता तो हमारा देश सन् 1857 में ही आजाद हो जाता । रानी लक्ष्मीबाई को केवल एक स्त्री समझने की भूल ने हमारे देश को 200 साल की गुलामी दे गयी। जब देश आजाद हुआ तो देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा –

" लोगो को जगाने के लिए महिलाओं को जगृत होना जरूरी है ।एक बार जब वो अपना कदम उठा लेती है, परिवार आगे बढ़ता है गॉव आगे बढ़ता है और देश का विकास होता है।

आज नारी सशक्तीकरण बहुचर्चित विषय है।

नूतन वन्दना
बी० एड० 2017–19

बरसात के वो दिन

आज बहुत दिनों के बाद होठो पर मुस्कान आई।
क्यूँकि घिर–घिर के सावन का बदरी छाई,
तरस रही थी नजरे जिसको देखने को,
मेरी नजरों की प्यास बुझाने आई,
बरसी जब सावन की पहली बूंदे,
दिल को किसी की याद सताई
जब चली हवा मन्द चाल में, उल्हड़सी मेरी तन मन में लचक छाई
फूलों की खुशबू से हुआ किसी के पास होने का अहसास,
मुझे किसी के यादों में भींगा गइ।
बरसती बादलों को मेरा यूँ देखना,
जैसे मुझे कोई बुला रहा हो
गिरती बूँदों की सरगम में प्यार का गीत सुना रहा,
चमकती बिजलिया और गरजते बादल
हाय किया किसी के याद ने मुझे घायल,
अपनी यादों का जाम मुझे पिला रहा ,
है कोई अपना जो मुझे बुला रहा
क्या कहूँ इस मौसम का जो दे गया सौगात किसी अपने के होने का
पल भर को किसी का मुझे बना गया
किसी के यादों में मुझे भींगा गया
मेरी होठों पर है मुस्कान छायी
क्यूँकि आज उसे भी मेरी याद तो आई
बहुत दिनो.....

निधि कुमारी
D.El. Ed.
सत्र – 2017–19

पुस्तक का रहस्य

पुस्तक हमारे अनमोल रत्न है
जो इसका रहस्य समझ जाए।
उसका विकास कोई ना रोक पाये।
ये विश्व के ज्ञान से अवगत कराये।
समझों बच्चों इसको अपना मित्र
ये सदा तुम पर अमृत बरसाये।

कभी आनंद का मार्ग दिखाये।
कभी प्रेरणा का स्त्रोत बने।
पुस्तक हमारा अनमोल रत्न है।

ये हमारी ज्ञान पूंज है
जो घर में संस्कार रूप में
मानवता के हृदय में नौतिक रूप में
विश्व के सागर में भरा ज्ञानमय ज्योति

चन्द पन्नो में यह इतिहास को समेटे,
आज का आइना भी दिखलाये।
खामोश रह कर भी जीवित है
पुस्तकालय में भविष्य बनाये।
पुस्तक हमारा अनमोल रत्न है।

कबीर, रहीम, के दोहे है इसमें
साधु, संतो, कवियों की वाणी है इसमें
वेद ग्रन्थो का सार है ये:
कथा पुराणो का सग्रह है
जो धर्म, अधर्म से अनुभूति कराये।
पाप–पुण्य का विभेद करे,
जन्म मरण का सत्य बतावें,
वैज्ञानिकों को राह दिखाये
दर्शन को नव विचार प्रदान करे।
पुस्तक हमार अनमोल रत्न है ।

पुजा कुमारी
D.El. Ed.
सत्र – 2017–19

छात्र और अनुशासन

'अगर चाहते हो जीवन में मिले सफलता का सिंहासन मर्यादा में रहना सिखो, करों सदा पालन अनुशासन,,।
विद्यार्थी जीवन एक अमूल्य हीरे के समान होता है इसें यदि अनुशासन के साँचे में ढ़ाल दिया जाए तों यह और चमक उठेगा। क्योंकि अनुशासन रूपी लगाम ही जीवन कों नियंत्रण करती है। अनुशासित छात्र ही अपनें जीवन का निर्माण कर सकता हैं जिस सेना में अव्यवस्था होता है वह सेना देश की रक्षा में असफल हो जाती है जिस उद्योग केंद्र में मजदुर अनुशासन हीन हों वह भी शीघ्रही अवनति की ओर उन्मुख होकर समाप्त हो जाता हैं अतः छात्रों में अनुशासन का होना परम आवश्यक है क्योंकि ये ही कल के कर्णधार है इन्ही पर देश का भविष्य टिका हुआ है।
देश तरक्की न करें, चाहे जों करे शासन।
जब तक उसमें न रहे, भीतर से अनुशासन।।

संसारमें प्रत्येक प्राकृतिक वस्तु अनुशासन में रहकर चलती है जिस तरह सूरज पूरब में उदय होता है और पश्चिम में अस्त होता है, उसी तरह रजनी भी चंद्रिका से विभूषित हो तारों सें अपना शरीर कों सजाकर आती है। प्रातःकाल में सूर्य की लाली में डूब जाती हैं उसी मर्यादा में रहकर समय पर करें तो उन्हें सफलता पानें से कोई नहीं रोक सकता।

लेकिन दुःख की बात है कि आज छात्र अनुशासन को भूलते जा रहे है जहाँ वे एक दूसरें ओर पढ़ाई में रूची न लेकर उडंता और अनुशासनहीनता कों अपनाकर बुरी संगति के शिकार हो जाते है,अनुशासन होने का प्रमुख कारण यह है कि हमारे शिक्षक भी जिस विषय को पढ़ाते है वें उस विषय के बारें में पूर्ण जानकार नही होते है जिससे छात्र उनके विषय में रूची न लेकर अनुशासनहीनता का शिकार हो जाते है।

"अनुशासन का पालन करना कड़वा होता हैं लेकिन अनुशासन का पालन करने के बाद मिलने वाला फल बहुत मीठा होता है।

अतः

आज आवश्यकता इस बात की हैं बच्चों का अनुशासन में लाने के लिए माता – पिता, गुरू, को यह कर्त्तव्य वह अधिकार है कि वे बालक कों सही काम करने पर प्रशंसा गलत करने पर ऐसा नही करने की सलाह देकर उसें उन्नति मार्ग की ओर अग्रसरित कर एक सच्वें नागरिक का निर्माण करें, इसी बात पर कहा भी गया है किः–

"अनुशासन ही छात्र जीवन का आधार जिसके बल पर कर सकते अपनें सपनों को सकार"

नीवेदीता
D.El. Ed.
सत्र – 2018–20

परिचय

क्या! तू पूछ रहा है परिचय,
मैं परिचय क्या बतालाऊँ,
जग पूछ रहा है कौन?
कहाँ मैं अपना घर बतलाऊँ?

इतना तो मैं मान चूँकी हूँ
मैं मानव हूँ इस जग में,
मैं भी यह जान गयी हूँ?
है प्यार भरा यौवन में।

मैं कौन? कहाँ से आयी?
इसकी क्या कथा सुनाऊँ,
किस ओर पुनः जाऊँगी
यह कैसे तुझे बताऊँ?

मैं किससे पूछँ जग में
है कौन यहाँ पर मेरा?
जो सचमुच पार लगा दे?
वह देव कहाँ प्यारा।

बस इतना ही परिचय है मेरा
जग में है दो दिन ही रहना।
हूँ अब न जान सकी अब तक,
फिर कौन देश है जाना?

बस रूक जा निर्झर अब तू,
मे खतम करूँ फिर लिखना।
यह सोच सकेगा सब जन
इतना ही परिचय है देना।

सुष्मिता
सत्र – 2018 – 20

हमारे बुजुर्ग ही हमारे धरोहर

"कभी कठिनाइयों में जब हमारी जान आती है बुजुर्गो की हुआ उस वक़्त अपने काम आती है"

बुजुर्ग नाम सूनते ही आज के युवा पीढ़ियों के चेहरे पर एक अजीब सा बोझेपन के भाव देखने को मिलता है। वे बुजुर्गो को बोझ के समान समझते है। आज के इस दौड़ती – भागती दुनिया में लोग इतने व्यस्त हो गये है कि बड़े – बुजुर्गो का सम्मान करना ही भूल गये है। जिस बुजुर्ग के छात्र – छाया में हम पले –बढ़े। आज हम उनकी आत्मीय – सानिध्य को अपनों से दूर कर देते है। उनके कांपते हाथो में इतनी शक्ति होती है कि उनके आर्शीवाद से जिंदगी खुशहाल सी हो जाती है। उनका स्पर्श एक अजीब सा स्फूर्ति और साहस देती है, जो विषम से विषम परिस्थितियों को सामना करने योग्य बनाती है।

"हमसे अधिक समझदार और तजुबेदार है, ओर कुछ लोग समझते, बुजुर्ग बेकार है।।"

आज की पीढ़ी क्यों उनकी इस त्याग –भावना को समझ ही नहीं पाते, और उनकी इस अवस्था को बोझ समझने की भूल कर बैठते है। उनसे छुटकारा पाने के लिए भेज देते है वृद्धाश्रम! हमारे बड़े –बुजुर्ग संस्कारों का वट–वृक्ष होते है। वे सच्चे पथ – प्रदर्शक एवं मार्गदर्शक होते है। बुजुर्गो की इस अवस्था को समझना होगा। क्योंकि प्रकृति का नियम ही है बदलाव। प्रकृति की इस बदलाव को अस्वीकृत करना बुद्धिमानी नहीं है। अपितु अज्ञानता है। हम उनकी प्रेम भावना को समझ ही नहीं पाते है। उनका प्रेम, स्नेह, वात्सलय का सागर बेहद उत्कृष्ट और भावनाओं से ओतप्रोत होता है। उनके पास तो जीवन भर के अनुभवों की एक अलिखित किताब होती है, जो दुनिया की सबसे अच्छी किताबों में से एक होती है। हमारा अस्तित्व उन्हीं से है, तो फिर उन्हें प्यार, सुरक्षा और सम्मान देने में शर्म कैसा।

"बुजुर्गो के साथ कुछ पल तो बिताएँ
उनके प्रेम भाव से गले लगाये।
उनके विचारों को दिल से अपनाए
भगवान की तरह उनका सम्मान कराए।"

अतः हम युवा पीढ़ियों से यह आग्रह है कि वे बड़े – बुजुर्गो को बोझ ना समझकर बेशकिमती धरोहड़ समझें।

पुष्पा कुमारी
D.El. Ed.
सत्र – 2017–19